दीनदयाल उपाध्याय और अंत्योदय

अनिल कुमार
असि. प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग
श्री बजरंग पी. जी. कॉलेज,सिकंदरपुर, बलिया, उत्तर प्रदेश
Email-anil.bhu06@gmail.com

सारांश-

किसी भी देश या अर्थव्यवस्था के लिए आर्थिक विकास का होना बहुत जरूरी है। आर्थिक विकास से देश के लोगों में खुशहाली आती है और आमजन के जीवन स्तर के गुणवत्ता में सुधार होता है।

आर्थिक विकास सही मायने में तभी होता है जब इसके द्वारा समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति का उत्थान हो, विकास हो, अर्थात अंतिम व्यक्ति का भी उदय हो।

यह विचार ही अंत्योदय है।

सबसे पहले अंत्योदय का विचार दीनदयाल जी ने दिया। दीनदयाल जी का स्पष्ट मानना था कि आर्थिक विकास का उद्देश्य समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का विकास और उत्थान होना चाहिए, तभी यह आर्थिक विकास सार्थक है।

देश की सरकारें भी इस बात को महसूस किये और अंत्योदय के विचार के अनुरूप कई योजनाएं एवं कार्यक्रम देश में लागू किये। इन योजनाओं के माध्यम से सरकारों ने समाज के सबसे गरीब, वंचित और पिछड़े लोगों के जीवन स्तर में सुधार भी किये।

मुख्य शब्द:

एकात्म मानववाद, अंत्योदय, उत्थान, गरीब, वंचित, आर्थिक विकास, समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति, अंत्योदय दिवस, दीनदयाल अंत्योदय योजना, अंत्योदय अन्न योजना

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का विचार दर्शन

'एकात्म मानववाद' के नाम से जाना जाता है।

यह दर्शन मानव को एकात्म अथवा समग्र रूप में देखता है और उनके शाश्वत सुख और कल्याण की बात करता है।

दीनदयाल जी का मानना था कि भारत और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए न पूंजीवाद सही है और न ही समाजवाद। हमारे देश के लिए एकात्म मानववाद की विचारधारा ही उपयुक्त है। यह विचारधारा कोई नयी विचारधारा नही है बल्कि हमारी सनातनी अर्थव्यवस्था की जो विशेषताएं थी उसी का युगानुकूल रूप है, जिसका केंद्र बिंदु ही मानव है और मानव का सर्वांगीण विकास।

दीनदयाल जी के प्रमुख आर्थिक विचार-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने अपने विचार दर्शन 'एकात्म मानववाद' के अंतर्गत विभिन्न आर्थिक मुद्दों पर अपने आर्थिक विचार दिए।

दीनदयाल जी मुख्य रूप से कृषि विकास, ग्रामीण विकास, स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, विकेंद्रीकरण और अंत्योदय पर अपने आर्थिक विचार दिए है जो बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है।

अंत्योदय-

अंत्योदय शब्द का अर्थ है-

“अंतिम व्यक्ति का उदय” या समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति तक विकास और समृद्धि पहुंचाना।

अंत्योदय का विचार पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने दिया, जो उनके विचार दर्शन 'एकात्म मानववाद' का एक महत्वपूर्ण भाग है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का अंत्योदय का विचार बहुत ही सहज है। दीनदयाल जी अपने दर्शन एकात्म मानववाद में स्पष्ट करते हैं कि हमारा केंद्र बिंदु मानव है, मानव का सर्वांगीण विकास।

अंत्योदय का अर्थ है "सबसे पिछड़े व्यक्ति का उत्थान"। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने इस अवधारणा को अपने विचार दर्शन का केंद्र बनाया। उनका मानना था कि समाज की प्रगति का मापदंड, सबसे कमजोर और गरीब व्यक्ति की स्थिति में सुधार होना चाहिए। अंत्योदय का लक्ष्य समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को उठाना है, जिससे समाज में समरसता और न्याय स्थापित हो।

यदि कोई देश बहुत तीव्र आर्थिक विकास कर रहा है परंतु समाज में खड़ा अंतिम पायदान का व्यक्ति का विकास नही हो रहा है या उसकी जीवन स्तर में सुधार नही हो रहा है तो ऐसी विकास किसी काम की नही।

आर्थिक विकास होने का तभी मतलब है जब उसका लाभ समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को भी मिले। अर्थात अंतिम व्यक्ति का भी उदय हो, विकास हो। इसी को दीनदयाल जी अंत्योदय कहते हैं।

दीनदयाल जी अंत्योदय में यकीन रखते थे। उनके अनुसार अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का भी विकास होना चाहिए।
दीनदयाल जी के अनुसार आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य आत्मनिर्भरता और विकेंद्रीकरण होना चाहिए, जिससे समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का भी उत्थान हो अर्थात अंत्योदय हो।

अंत्योदय और सरकार-

अंत्योदय का विचार पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने दिया था। यह विचार समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान और विकास पर केंद्रित है।

सरकार द्वारा दीनदयाल जी के जन्मदिन 25 सितंबर को देश में अंत्योदय दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सरकारों द्वारा भी समय-समय पर अंत्योदय के विचार को बढ़ावा दिया जा रहा है।

अंत्योदय के विचार को पहली बार 1977 में राजस्थान में भैरव सिंह शेखावत के नेतृत्व वाली सरकार के समय लागू किया गया था।

सरकारों द्वारा इस विचार के आधार पर कई सरकारी योजनाएं शुरू की गई हैं, जैसे **'दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय योजना'**।

2014 में देश मे मोदी सरकार के आने के बाद दीनदयाल जी के अंत्योदय के विचार से प्रभावित होकर केन्द्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में मौजूद एनडीए सरकार और तमाम प्रदेशों में शासन करने वाली भाजपा सरकारें अंत्योदय के रास्ते पर बढ़ने की ओर अग्रसर हैं तथा गरीब, ग्रामीण एवं किसानों के लिए और समाज के सबसे शोषित वर्ग से आने वाले युवाओं और महिलाओं के कल्याण एवं विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं।

भारत सरकार ने पंडित दीनदयाल जी के आर्थिक विचार 'अंत्योदय' से प्रेरित होकर कई कार्यक्रम एवं योजनाएं शुरू किए है। जो इस प्रकार है-

*** दीनदयाल अंत्योदय योजना (ग्रामीण)**

*** दीनदयाल अंत्योदय योजना (शहरी)**

*** मिशन अंत्योदय**

*** राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन**

*** राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन**

इन योजनाओं एवं कार्यक्रमों का उद्देश्य समाज के निचले पायदान पर खड़े वंचित लोगों को, गरीबों को रोजगार एवं स्व-रोजगार के अवसर देकर और कौशल विकास को बढ़ावा देकर इनका उत्थान एवं विकास करना है। इसके अतिरिक्त, सरकार द्वारा **अंत्योदय अन्न योजना** के तहत सबसे गरीब परिवारों को खाद्यान्न उपलब्ध कराया जाना और **प्रधानमंत्री आवास योजना** के द्वारा गरीबों को घर उपलब्ध कराया जाना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष रूप में देखा जाय तो दीनदयाल जी का अंत्योदय का विचार आज भी बहुत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है।

अंत्योदय का विचार समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति के उत्थान एवं विकास पर केंद्रित है।

अंत्योदय का विचार, भारतीय राजनीति, अर्थनीति और समाज सेवा को नई दिशा दी है।

आज भी देश की सरकारे अंत्योदय की विचारों से प्रेरित होकर गरीबों, वंचितों व पिछड़े लोगों के लिए योजनाएं एवं कार्यक्रम ला रही है, साथ ही समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का उत्थान एवं विकास भी हो रहा है।

संदर्भ-

1. उपाध्याय, दीनदयाल (1958). भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

2. उपाध्याय, दीनदयाल (1972). राष्ट्रचिंतन. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

3. उपाध्याय, दीनदयाल (1979). राष्ट्रजीवन की दिशा. लखनऊ: लोकहित प्रकाशन.

4. उपाध्याय, दीनदयाल. एकात्म मानववाद. नई दिल्ली: भारतीय जनसंघ कार्यालय.

5. उपाध्याय, दीनदयाल (1991). एकात्म मानव दर्शन (दीनदयाल उपाध्याय, माधव सदाशिव गोलवलकर, दत्तोपंत ठेंगड़ी, तृतीय संस्करण). नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

6. ठेंगड़ी, दत्तोपंत (1991). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्ति दर्शन खंड- 1: तत्व जिज्ञासा. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

7. कुलकर्णी, शरद अनन्त (2014). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: विचार दर्शन खंड-4: एकात्म अर्थनीति. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

8. पाठक, विनोद चंद्र (2009). पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिन्तन. नई दिल्ली: प्रकाशक- आर. डी. पाण्डेय, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस.

9. गुप्त, बजरंग लाल (2014). दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म अर्थ चिंतन. मीडिया-विमर्श.

10. www.india.gov.in

11. www.dord.gov.in

12. www.drishtiias.com

13. दैनिक समाचार पत्र।